पाठशाला क्यों
आवश्यक हैं ??

णमोकार मंत्र, चत्तारि मंगलपाठ का अर्थ वह बच्चा पाठशाला में ही सीखता है।

तीर्थकरों ,पंचपरमेष्ठी के बारेमें, भगवान कौन होते हैं ,कैसे होते है, यह पाठशाला में ही सीखता हैं

. पानी क्यों छानना चाहिए, जीवों की रक्षा क्यों करनी चाहिए, यह पाठशाला में ही सीखता हैं।

सच्चे देव शास्त्र गुरु का ज्ञान श्रद्धान पाठशाला ही सिखाती है

अनेक महापुरूषो की तीर्थकर की कहानी सुनता है

.पाठशाला का बच्चा अन्य छात्रों में हीरे के भांति अलग ही चमकता है।

दशलक्षण ,अष्टान्हिका पर्व,तीन लोक का वर्णन, जैसी शिक्षा का ग्रहण पाठशाला मे ही होता है

वह नियम पालन सीखता है,व्रत उपवास का महत्व सीखता है ।

1-"मैं जीव हूँ मुझमे ज्ञान है" एसा एक बच्चा सबसे पहले पाठशाला में ही सीखता है यही "जिनागम" का सार है।
2-बचपन मे चार अनुयोगो का ज्ञान उसे बालबोध पाठमाला वीतराग विज्ञान पाठमाला1 ,2,3 में ही हो जाता हैं
3-प्रथमानुयोग:-राजा ऋषभदेव, करणानुयोग:-कर्म , चरणानुयोग:-दिनचर्या,द्रव्यानुयोग:-जीव अजीव
4-पाठशाला वह स्थान है जहाँ पर शिक्षक द्वारा ज्ञान दान होता है, ज्ञान दान सबसे उत्तम दान है, वह अमूल्य है ।
5-वही जैन धर्म का मूल बीज है जो बढ़ा होकर वृक्ष की भाँति सम्यक रूपी फल प्रदान करेगा ।
“हर बच्चा एक गीली मिट्टी की तरह है जिसको आकर देता है पाठशाला शिक्षक ।

QUALITIES OF
A
TEACHER

- जिस प्रकार सम्यकदृष्टि के आठ अंग होते है उसी प्रकार एक शिक्षक को भी आठ अंग से शुशोभित होना चाहिए॥

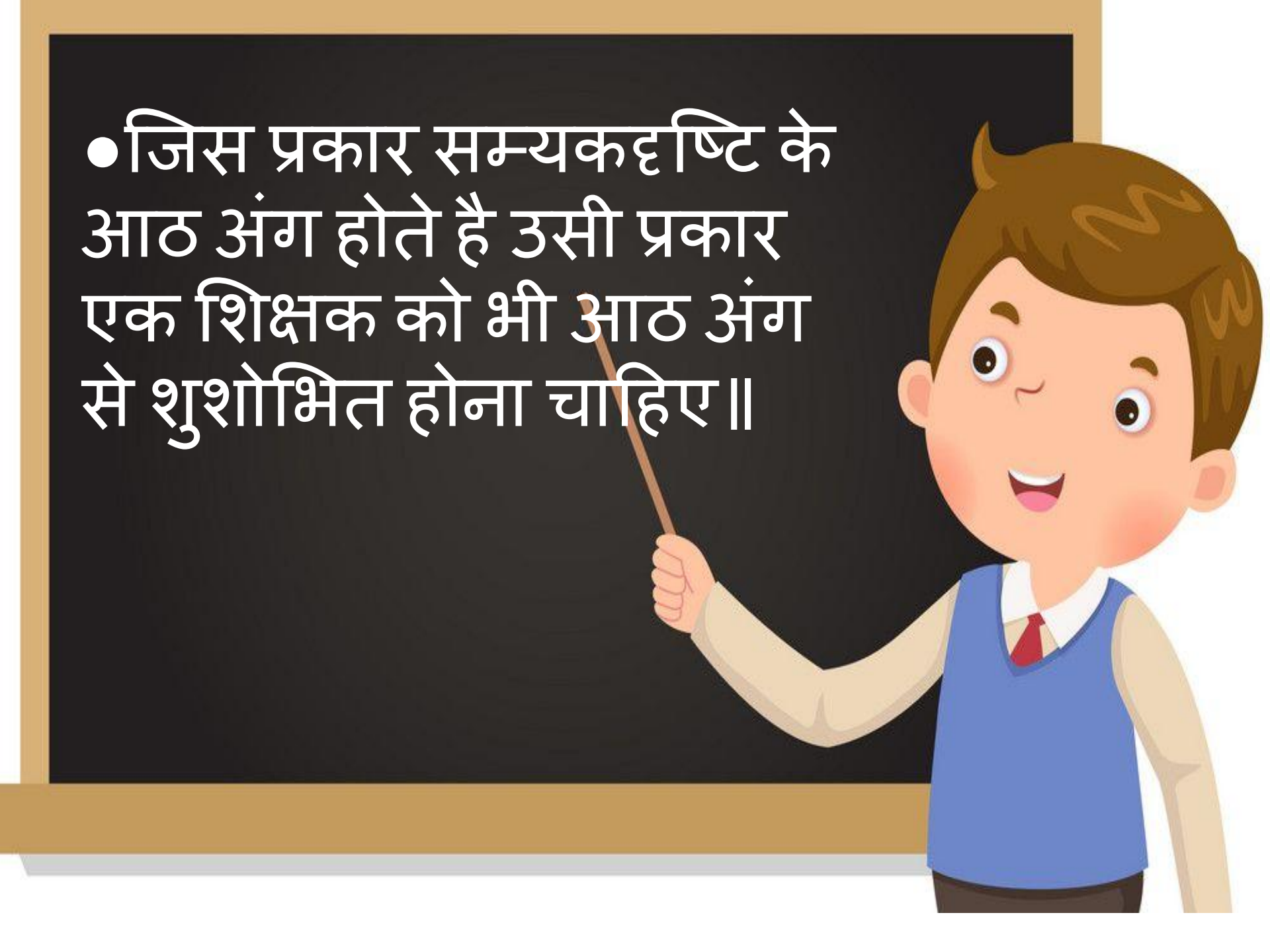

1--**<u>नि:शंकित</u>**-एक शिक्षक को जैन धर्म पर शंका नही चाहिए, वह जो बोले उससे शिष्य को शंका उत्पन नही होना चहिए, कदापि शंका हो तो उसका समाधान करना चाहिए।

2--**<u>नि:कांक्षित</u>**-एक शिक्षक को मान, प्रतिष्ठा या धन-लाभ की कांछा नही होनी चहिये ,सभी जीवों को धर्म लाभ हो यही कांछा होनी चहिये

3--**<u>निर्विचिकित्सा</u>**-एक शिक्षक को अपने शिष्य से ग्लानी का भाव नही होना चहिये उसे सभी शिष्यों मे समता भाव होना चहिए ।

4--**<u>अमूढदृष्टि</u>**-एक शिक्षक को सच्चे देव शास्त्र गुरू के प्रति सच्चा श्रद्धान होना चाहिए,उसे अपने शिष्यो को भी सच्चे देव शास्त्र गुरू का ज्ञान कराना चाहिए ।

5---उपगूहन- एक शिक्षक को सबके सामने अपने शिष्यों के दोष ढाकने चाहिए जिससे उसका मनोबल न गिरे ओर गुप्त मे उसे उसके दोषो का ज्ञान कराके उसके दोष दूर करने चाहिए

7--वात्सल्य-एक शिक्षक को सदैव अपने शिष्य के साथ वात्सल्य भाव एवं प्रेम होना चहिए।

6--स्थितिकरण-अगर किसी शिष्य का मन खेल कूद आदि मे भटक गया और धर्म मे न लग रहा हो तो एक शिक्षक को उसका मन स्थिर कर धर्म मे लगाना चहिए।

8--प्रभावना-एक शिक्षक को सदैव ज्ञान दान करके जिन धर्म की प्रभावना करनी चाहिए ।

एक शिक्षक आचार्यो का शिष्य होता है उनकी ही शिक्षा को वह अपने शिष्यो में प्रदान करता है इसलिए उस शिक्षक को सर्वप्रथम अपने गुरुओ से सीखना चाहिए

आचार्य कुंदकुन्द

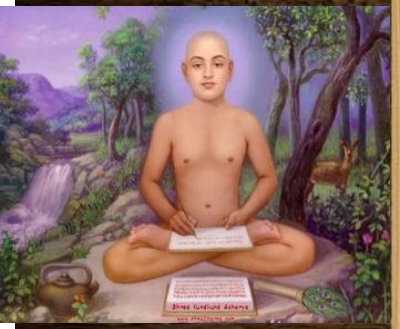

आचार्य कुंदकुन्द जी - जिस प्रकार कुंदकुन्द आचार्य ने पंच परमागम मे कही-कही पर हे भव्य जीव , हे दुष्ट , जैसे वचनों का प्रयोग कर करुणा भाव से संबोधन क्या है उसी प्रकार एक शिक्षक को भी करुणा भाव से अपनों शिष्यो को संबोधन करना चाहिए ।

पण्डित टोडरमल जी - जिस प्रकार पण्डित टोडरमल जी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक मे स्वयं प्रश्न उठाकर स्वयं उसका समाधान दिया उसी प्रकार एक शिक्षक को भी अपने विद्यार्थी के प्रश्न उठने से पहले ही उसके उत्तर का ज्ञान होना चहिये और उसमे अनेक प्रश्नों को एक साथ सहने का सामर्थ होना चाहिये ।

पण्डित टोडरमल

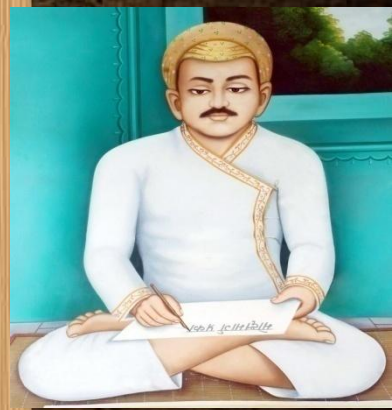

आचार्य धरसेन जी -जिस प्रकार आर्चाय धरसेन जी ने अपने शिष्यो की परीक्षा कर योग्य शिष्य को उपदेश दिया और जिनश्रुत को लिपिबद्ध करने का उत्तरदायित्व दिया ,उसी प्रकार एक शिक्षक को अपने शिष्य की प्रतिभा परखकर जिनधर्म प्रभवना का उत्तरदायित्व देना चाहिए।

अकंम्पनाचार्य जी -जिस प्रकार आचार्य अकंपनाचार्य ने जिनधर्म की रक्षा हेतु अपने प्रिय, योग्य प्रतिभावान शिष्य 'श्रुतसागर 'मुनिराज को दण्ड दिया था , उसी प्रकार अगर कोई योग्य शिष्य गलती करता है तो उसे भी दण्ड देना चाहिए,और भविष्य मे एसी गलती ना हो इसका उपदेश देना चाहिए ।

आचार्य समंतभद्र जी -जिस प्रकार समंतभद्र जी ने अपनी विद्वत्ता से न्याय शास्त्र के द्वारा जिनधर्म कॊ विभुषित किया उसी प्रकार एक शिक्षक को तार्किक बुद्धि एंव न्याय नीति से पढाना चाहिए ।

New methods accepted By teachers to teach Pathshala children

Keeping pace with the digital era , pathshala should also use the best of animation and digital platform

A well scheduled and organised system should prevail like Saturday for story,games or any co-curricular activities and Sunday for poojan,prakshal etc

Whatsapp or telegram group should be maintained in order to keep parents well updated with their children's schedule

. A special class of naitik shiksha should be kept in which topics like how to talk,dress,eat,behave etc. should be taught for developing the overall personality of a child

A child is more likely to get attracted by what he sees than what he hears ,thus keeping this fact in mind,he should be provided with colorful eye-catching books so that his mind is always full of curiosity what will happen next

For a child ,gift is the biggest motivation.By this means children can be induced to take part in many dharmik activities

:-Make google form for quizes on various topics to create learning environment.

:-Teach kids how to make achaar and madhna

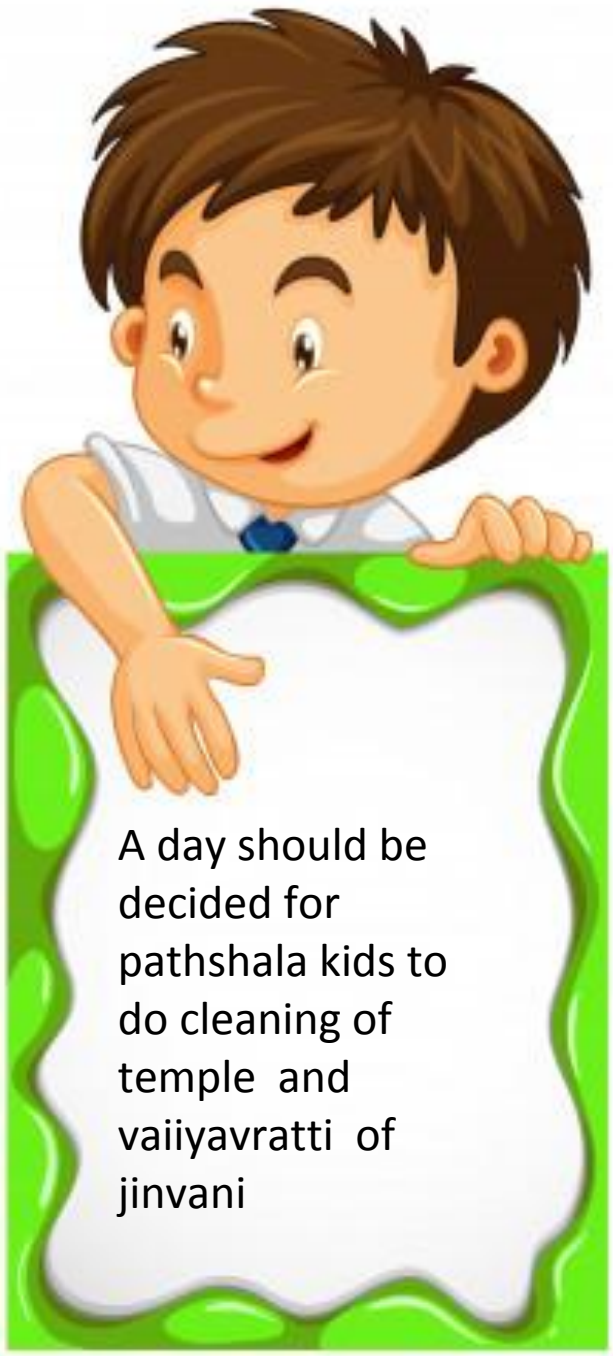

A day should be decided for pathshala kids to do cleaning of temple and vaiiyavratti of jinvani

A special room should be disigned that contains various charts of teenlok ,jambudweep etc

:-Room should contain LCD or projector to show videos to kids

बच्चो को रटाना ,या exam दिलाना हमारा मुख्य उद्देश्य नही है ,वह बच्चा उसका जीवन मे पालन करे एसी भावना से पढ़ाना चाहिए

नाटक इत्यादि मे हर बच्चे को part देना चाहिए
पात्र ना भी हो ,तब भी उसे कोई banner या flag पकड़ा दो जिससे उसमे भी उत्साह बना रहे

दशलक्षण पर्व में प्रवचन के समय माता-पिता के साथ आए हुए बच्चे अक्सर खेलते है तथा शोर मचाते है,इस समय का सदुपयोग करते हुए उनके लिए विशेष projector द्वारा कहानी दिखाई जा सकती है।

Everyone should donate in pathshala fund because poojan ki dravya etc ,.....Just goes to Mali's hand and after mali bhaiya it goes to restraunts for dosa etc but gift goes to your children's hand ,and afterwards it comes to your home only. Everytime that gift serve as a constant motivation for your child.

JAI JINENDRA

SUBMITTED BY

ATHMARTHY

PRAGYA JAIN